भूषण

जीवन परिचय-:

भूषण रीतिकाल के वीररस के विख्यात कवि हैं। कवि भूषण का जन्म कानपुर जिले के यमुना के किनारे स्थित त्रिविक्रमपुर (तिकवाँपुर) गांव मे हुआ था। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इनका जन्म काल सं0 1670 वि0 स्वीकार करतें हैं। इनके पिता का नाम रत्नाकर त्रिपाठी था। चिन्तामणि, मतिराम,और नीलकण्ठ (जटाशंकर) इनके भाई के रूप में स्वीकार किये गये हैं। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। भूषण के वास्तविक नाम का पता नही चल सका है। चित्रकूट के राजा ने इन्हें 'भूषण ' की उपाधि प्रदान की थी और इस नाम से ही ये साहित्य जगत मे प्रसिध्द हो गये। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार चित्रकूट के राजा रूद्रशाह सोलंकी ने इन्हें भूषण की उपाधि दी थी जबकि आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र 'भूषण' उपाधिदाता हृदयराम सोलंकी को मानते हैं। भूषण शिवाजी और छत्रसाल के आश्रय मे रहे । इनका देहावसान संवत 1772 वि0 माना जाता है।

शिवसिंह सेंगर के 'शिवसिंह सरोज' में भूषण की चार कृतियों का उल्लेख मिलता है-

शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास, दूषण उल्लास। इनमें से केवल 'शिवराज भूषण' ही उपलब्ध हैं। शेष तीन ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। भूषण के 'शिवबावनी ' और 'छत्रसाल दशक' ग्रन्थों के अतिरिक्त कुछ फुटकर छंद भी मिलते हैं।

'शिवराजभूषण ' भूषण की कीर्ति का अक्षय स्तम्भ है। भूषण के ग्रन्थ मे 105 अलकांरों का निरूपण है जिनमे चार शब्दालकांर, 99 अर्थालकांर तथा चित्र और संकर नामक दो अलकांर हैं। भूषण ने 'शिवराज भूषण' मे अलकांकरों के लक्षणों का विवेचन दोहा छंद में किया है और उनके उदाहरण कवित्त,सवैया,छप्पय और दोहा छंदों में प्रस्तुत किए है। इसमें अलकांरो के उदाहरणों में शिवाजी की प्रशस्ति-सम्बन्धी छन्द हैं। 'शिवराज भूषण ' अलकांर विवेचन और शिवाजी की प्रशस्ति का समन्वित प्रयास है। शिवाजी कि वीरता और महिमा की प्रशस्ति मे कवि जितना सफल है उतना अलकांर-निरूपण मे नहीं।

भूषण के काव्य के नाटक आतंक और अन्याय के दमन में तत्पर ऐतिहासिक वीर शिवाजी और छत्रसाल हैं, जिनकी शौर्यगाथा से जनता भलीभाँति परिचित रही है

भूषण की ख्याति का प्रमुख आधार उनका वीररसात्मक ओजस्वी काव्य है। भूषण ने वीररस के युध्द, दान, दया और धर्म सभी वेदों का सजीव और आकर्षक वर्णन किया है। भूषण के काव्य में वीभत्स, रौद्र, भयानक, अदभुत, करुण और श्रृंगार आदि के उदाहरण भी उपलब्ध हैं। विषय के अनुकूल ओजपूर्ण वाणी का प्रयोग उनके काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है। भूषण ने ब्रजभाषा को काव्यरचना का माध्यम बनाया है।

भूषण हिन्दी साहित्य की राष्ट्रीय चेतना के कवि माने जाते है। उनकी वाणी में अन्याय और अत्याचार के प्रतिरोध के साथ स्वधर्म- संरक्षण की भावना है। उन्होंने औरंगजेब के अत्याचार और उसकी धार्मिक कट्टर्तापूर्ण संकीर्ण नीति की कटु भर्त्सना की है। उन्होंने

अलकांर-निरूपण सम्बन्धी ग्रन्थ लिखकर जहाँ रीतिकालीन सामान्य पध्द्ति का पालन किया है।वहीं राष्ट्राभिमान से परिपूर्ण ओजस्वी कविताओं की सर्जना से राष्ट्र का गौरव भी परिवर्धित किया है। भूषण ने सम्सामयिक श्रृंगारम्यी कविता की अपेक्षा ओजगुणमयी वीररसात्मक कविता का वरण कर काव्य को आकर्षक और गौरवपूर्ण बनाया है। भूषण ने समसामयिक श्रृंगारमयी कविता की अपेक्षा ओजगुणमयी वीररसात्क कविता का वरण कर काव्य को आकर्षक और गौरवपूर्ण बनाया है। भूषण की कविता के सौन्दर्याभिव्यंजन में आलंकरिक माधुर्य और शब्द-विन्यास की चारूता का उत्कृष्ट योगदान है। वस्तुतः, भूषण हिन्दी की ओजमयी कविता के गौरव हैं। आचार्य विश्वनाथ मिश्र के अनुसार, "भूषण वीर रस के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, वीरकाव्यकर्ताओं के भूषण हैं।"

व्याख्या

भूषण

चन्दन में नाग मदभरयौ इन्द्र-नाग।

विषधरयौ शेषनाग कहै उपमा अबस की।

चौर यह रात न कपूर ठहरात मेघ।

सरद उड़ात बात लगें दिन दस की।

संभु नील ग्रीव बौरंर पुडरीक की बसनि।

सरजा सिवा जी बोल भूषन सरस कौ।

छरधि में पंक कलनिध में कलंक।

यातें रूप एक टंक ये लहैं न तेरे जस कौ।।

सन्दर्भ- इस सन्दर्भ में भूषण ने विभिन्न उपमानों को सामने लाते हुए शिवाजी के यश का वर्णन किया है-

व्याख्या-शिवाजी का प्रशस्तिगान करते हुए भूषण कहते हैं कि चन्दन जैसे सुगन्धित वृक्षों में भी विषैले नागों का निवास रहता है। इन्द्र नाग भी मद-भरा रहता है तथा शेषनाग जिस पर पृथ्वी पर भार है उसमें भी विष मौजूद है। कपूर कितना अच्छा पदार्थ है किन्तु वह भी सुबह तक नहीं ठहरता उड़ जाता है। शरद ऋतु दसों दिशाओं से मंडराते बादलों को उड़ा देता है शम्भू भगवान शंकर भी विषपान के कारण नीली ग्रीवा वाले बन गये। उनके पास सर्प निवास करते हैं, क्षीर सागर में भी कीचड़ रहता है तथा सुन्दर कलापूर्ण होते हुए भी चन्द्रमा में भी कलंक होने से उसकी शोभा में कमी नहीं आती है। भूषण कवि सरस शूरवीर शिवाजी की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि तुम्हारे यश और कीर्ति के समक्ष उनके किसी भी रूप से समानता नही जो सकती।

विशेष-(1) शिवाजी के प्रताप अर्थात वीरता का बड़ा ही मनोरम चित्र खींचा है कवि ने। (2) वीर रस का वर्चस्व है।

1. जीति लई बहुधा सिगरी घमासान कै बीरन हू की।

भूषन भ्वैसिला छीनि लई जगती उमराउ अमीरज हूँ की।

साहितनै सिवराज की धाकनि छूटि गई धृतिधीरन हूँ की।

मीरन क उर पीर बढ़ी यौ जु जुलि गई सुधि पीरन हूँ की।।

सन्दर्भ- उपरोक्त पद्यांश में छत्रपति शिवाजी के हौर्य का शोषण कवि ने किया है।

व्याख्या- भूषण जी कहते हैं कि घमासान लड़ाई लड़ते हुए वीर शिवाजी ने सम्पूर्ण पृथ्वी जीत ली है। अमि क्षत्रपों को एक-एक करके उन्होने श्रीहीन कर दिया है,क्ष क्योंकि उनकी सारी जमीन को अपने कब्जे में कर लिया है। वीर शिवाजी के शौर्य के सम्मुख बड़े-बड़े बुद्धिमान नतशिर हो गये। सबकी धाक और साख शिवाजी के सम्मुख मिट्टी में मिल गई है। बादशाह के प्रतिनिधि सरदारों के हृदय की धुकधुकी शिवाजी के शौर्य को देखकर बढ़ गई है और उन्हें अपने नितान्त आवश्यक कार्यों की भी याद न रही।

विशेष- (1) अतिश्योक्ति अनुप्रास अलंकार। (2) ब्रजभाषा। (3) वीर रस, ओजगुण तथा सवैया छ्न्द। (4) युगीन परिवेश की झलक।

2. चमकति चपला न फेरत फिरंगै भट।

इंद्र की न चाप रूप बैरख समाज कौ।

धाए धुरवा न छाए धूरि के पटल मेघ।

गिजबौ न साजिबौ है दुंदुभी-आवाज कौ।

भ्वैसिला के डरन डरानी रिपुरानी कहैं।

पिय भजौ देखि उदौ पावस की साज कौ।

घन की घटा न ग्जघटाने सनाह साज।

भूषन भनत आयौ सैन सिवराज कौ।

सन्दर्भ- प्रस्तुत छन्द में मुसलमान सरदारों और सेनापतियों की स्त्रियों में शिवाजी के आतंक और भय का वर्णन किया गया है। वर्षा के आगमन में शिवाजी की सेना का अनुमान करके भयभीत हो जाती हैं और पतियों से कहती हैं-

व्याख्या- शिवाजी के भय से भयभीत बनी हुई शत्रुओं की स्त्रियां कहती हैं कि हि स्वामी! तुम इस भ्रम में मत पड़ों कि वह वर्षा सजकर आ रही है। वह तो शिवाजी की सेना आ गयी है। यह वर्षा के उदय के रूप में शिवाजी की सेना ही है, इसलिए यहाँ से भाग चलो। जिसे तुम बिजली चमकना कहते हैं, यह बिजली नही चमक रही है, अपितु शिवाजी के योद्धा तलवारें गुमा रहे हैं। उन्हीं से बिजली कौंध रही है। यह वर्षा ऋतु में उदित होने वाला इन्द्रधनुष नहीं है। यह तो शिवाजी की सेना काम झण्डा है। आकाश में ये बादल छाये हुए नही हैं, अपितु सेना के चलने से उड़ी धूल के आवरण में छा गये हैं। यह बादलों की गर्जना नही है, यह तो शिवाजी की सेना के युध्द के नगाड़ों का घोर शब्द हो रहा है जिसे बादलों की घटा समझते हो, वह तो कवच धारण किये हुए हाथियों का झुण्ड है।

विशेष- 1. यहाँ शिवाजी के आतंक का सजीव वर्णन हुआ है।

2. **अलकांर-** उपमेय को उपमान कहकर छिपाना वर्णन होने से अपन्हुति अलकांर हैं।

3. अनुप्रास है।

3. देव तुरीगन गीत सुने बिन देत करीगन गीत सुनाएँ।

भूषन भागत भूप न आन जहान खुमार की कीरति गाएँ।

देत धने नृप मंगन कौं पै निहाल करैं सिवराज रियाएँ।

आन रितै सरसैं बरसैं पै बढ़ै नदियाँ नद पावस पाएँ।।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश अलकांर शिरोमणि , वीरता कं संगायक कवि 'भूषण ' द्वारा रचित 'शिवारज भूषण' से उद्धत है। जो हमारी पाठ्य पुस्तक से संकलित है।

प्रसंग- प्रस्तुत कवि ने वीर शिवाजी की यश, कीर्ति और वीरता का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि भूषण जी अमान्य राजाओं का तुलनात्मक चित्रण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि अन्य राजा तो घोड़ों के समूह को अपने प्रशस्ति गायन सुनने के बाद देते हैं किन्तु शिवाजी तो बिना गीत सुने ही हाथियों के समूह को दान दे देतें हैं। अत: शिवाजी के समान पूरे संसार में कोई राजा सुशोभित नही होता जिसकी यशस्वी कीर्ति इअतनी फैली

हुई हो, अर्थात सिवाजी की कीर्ति निरन्तर चितंरजीवी हैं। कवि भूषण आगे कहते हैं – अन्य राजा जो याचक को ढेर- सारा धन देते हैं पर, शिवाजी जो अपने याचक को पूरी तरह से तृप्त ही नही कर देतें हैं। यह अनुभावना ठीक इसी तरह है कि अन्य ऋतुओं तो केवल वर्षा आने पर ही सरसित होती हैं, लेकिन नदियाँ वर्षा ऋति मे छोटे-छोटे नालों के जल प्लावन के कारण ही आगे बढ़ती हैं।

विशेष-1. उपर्युक्त छ्न्द में कवि वीर शिवाजी का यश-गायन किया है। 2. कवि ने अन्य राजाओं की तुलना में शिवाजी को अत्याधिक कीर्तिमान माना है। 3. कवि ने शिवाजी को विशिष्ट दानी राजा स्वीकार किया है।

4. अति मतवारे जहाँ दुरदै निहारै जहाँ।
तुरगन ही मैं चंचलाई परकीति है।
भूषन कहत जहाँ पर लगै बानन कों
कोक पच्छिनहिं माहिं बिहुरन-रीति है।
गुनि गन चोर जहाँ एअक चित्त ही के लोग
बाँधे जहाँ एक सरजा की गुन-प्रीति है।
कंप कदली में बैर बृच्छ बदरी में सिव
राज अदली के राजा में यौं राजनीति है।

सन्दर्भ- इस छन्द में भूषण ने शिवाजी की दानशीलता और धिर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या- कवि भूषण जी कहते हैं कि शिवाजी के राजा में यदि कही कोई मदमस्त होने वाला है तो वह केवल हाथी ही है, और यदि किसी में चंचलता परिलक्षित होती है तो केवल घोड़ों में दिखाई पड़ती है। भूषण जी कहते हैं कि यदि कहीं पंख लगे हैं तो यहाँ बाणों में ही लगे हैं और यदि कहीं कोई विछोह वियोग में है तो केवल चक्रवाक पक्षियों में ही है। अगर कहीं कोई चोर है तो गुणों को चुराने वाला है, भावतः राज्य के सभी लोग एक ही भाव-गुम वाले है और यदि कहीं कोई बंधन या बंधाव है तो के केवल शिवाजी के गुणों और प्रीति से लोग बँधे हैं और यदि कहीं कम्पन है तो केले के वृक्ष में है, और यदि कहीं बैर है तो के नामानुरूप बैर का वृक्ष है। कवि कहता है कि राजा शिवाजी के राजा में इस तरह की राजनीति भावित है।

विशेष- (1) प्रस्तुत छंद में शिवाजी के राजा- व्यवस्था का चित्रण कवि ने किया है।

2. परिसंख्या अलकांर द्रष्टव्य है